संध्या प्रार्थना

एवं

संत वाणी

प्रकाशक—
भगवद्भक्ति आश्रम जींद

मिलने का पता—
लेखराम चम्पापुरी चरखी दादरी।

नम्र-निवेदन

प्यारे जिज्ञासुओ ! आप की सेवा में भक्ति ज्ञान और वैराग्य आदि का उत्तम संग्रह, महान सन्तों की व्याख्या एवं शब्द गणी के रुप में आप सज्जनों की सेवा में समर्पित किया जाता है।

आशा है आप शान्त चित्त से चिन्तन-मनन कर स्वयं लाभ उठाकर दूसरों को भी इस अमृत पान का रसा स्वादन करावेंगे।

अन्त में हम उन सज्जनों के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिन्होने पुस्तक छपवाने में आर्थिक सहयोग किया है। उन भक्तों के नाम ये हैं।

१	मामनचन्द ठेकेदार तुसाम भिवानी	१०१)
२	रतनलाल महरम नगर, दिल्ली	१०१)
३	लेखराम चम्पा पुरी चरखी दादरी	१०१)
४	विश्वम्भरनाथ चम्पापुरी चरखी दादरी	११)

निवेदकः—
ब्रह्मचारी

जगत में हरि सम मित्र न कोई ॥ टेक ॥
भांति २ के देत पदारथ कृपा नीर से धोई।
जो नर हरि सो करे मित्रता आप हरि सम होई ॥
हरि सुमिरण सत्सङ्ग जगत्में सार पदारथ दोई।
भजो कन्हैयालाल हरि को वृथा जन्म मत खोई ॥

* प्रार्थना *

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य ।
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ ॥

ॐ=सर्व व्यापक, सबकी रक्षा करने वाले ।

भू = सत्ता स्फूर्ति देने वाले सत्य स्वरुप ।

भुवः = दुःखो का नाश करने वाले, ज्ञान स्वरुप ।

स्वः = सुख स्वरुप ।

तत् = अनन्त अपार सब के सार भूत परमात्मा ।

सवितुः= सब जगत के उत्पन्न करने वाले, पालन करने वाले, संहार करने वाले, प्रेरणा करने वाले ।

वरेण्यम्=सर्व श्रेष्ठ ।

भर्गो= तेज, पुञ्ज ज्योति स्वरुप ।

देवस्य = दिव्य ज्ञान और आनन्द के देने वाले, विजय कराने वाले, प्रकाश स्वरुप, सर्व शक्तिमान् , दयालु, कृपालु परमात्मा का ।

धीमहि – हम आपका ध्यान करते हैं ।

धियः – बुद्धियों को

यः – जो

नः = हमारी

प्रचोदयात्=प्रेरणा करें। आप हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करें, कि हम आप को प्राप्त हों। हमको पवित्र बुद्धि और अपनी भक्ति प्रदान कीजिये।

—0000—

❀ मङ्गलाचरण ❀

ब्रह्मानन्दं प्रमसुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्,
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी, साक्षिभूतम्,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

ॐ यत्तेजःसवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे।
तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

हे तेज पुञ्ज ज्योति स्वरुप प्रमात्मन्। ज्ञान और आनन्द के देने वाले। विजय कराने वाले। प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सबको उत्पन्न करने वाले। सबका संहार करने वाले। सबकी रक्षा करने वाले। सबको प्रेरणा करने वाले। अनन्त, अपार, आनन्द स्वरुप ज्ञान स्वरुप

परमात्मन् । हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हममें प्रगट हो और हम तुमको प्राप्त हो । जो तुम हो सो ही हम है और जो हम है, सो ही तुम हों, ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं । तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो, हममें तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे । सबको हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हो । भीतर काम क्रोध इत्यादि, और बाहर हमारी उन्नति में बाधक विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों, जिससे आनन्द पूर्वक हम आप को प्राप्त हों । धन्यवाद पूर्वक हमारी आप को अनन्तवार नमस्कार हों । हमारी रक्षा करो एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो ।

॥ ओं शंकरोतु शंकरः ॥

क्षमात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरुप ।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरुप ॥
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरुप ।
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्य स्वरुप ॥
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरुप ।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यान स्वरुप ॥
लहर रही है ज्योति चिदानन्द की ।

चिदानंद की परमानन्द की ॥
सब ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग पर ।
सत्ता स्फूर्ति सबको दे रही है निजानन्द की ॥
सारे विश्व के बाहर भीतर ।
हृदय कमल में सूर्य मण्डल में ॥
जगमगा रही है ज्योति महानन्द की ।
यह संसार असार है अन्तिम ।
एक ही ज्योति है अखण्डानन्द की ॥
सूर्य चन्द्र विद्युत और तारे ।
अग्नि ज्योति है भगवानन्द की ॥
ज्योति बिना कुछ और नहीं है ।
अहं ज्योति है ज्ञान यही है ॥५॥
अहं ब्रह्मादिव ज्ञान की ज्योति ।
जग रही है घट घट परमानन्द की ॥६॥

ओं नमः शम्भवाय च मयो भवाय च । नमः शंकराय च मयस्कराय च । नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म । शान्ति सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः । सामा शान्तिरेधि ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

भजन नं० १

दोहा—ओ३म् निरंजन दुख भंजन एकंकार ओंकार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सत्राधार ॥

ओ३म् निरंजन एकंकार प्रभु, सोऽहं सत्य नाम करतार ।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूप निरधार ।।टेक।।
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार ।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ।।१।।
राम आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सर्व का सार ।
ओत प्रोत सबमें निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ।।२।।
हरि नारायण आग्नि तार, देव देव मैं करहुँ पुकार ।
कृष्णानन्ताऽच्युतनं गौड, हूँ फट अल्ला सर्व पसार ।।३।।
विनवौं तुमको बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार ।
तदन गणपति नैन मझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ।।४।।

भजन नं० २

दीनानाथ दयानिधि स्वामी कौन भाँति मैं तुम्हें रिझाऊं ॥टेक॥
श्री गंगा चरणों से निकसी, शूचो नीर कहां से प्रभु लाऊं ।
काम धेनु कल्प वृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदार्थ भोग लगाऊं ॥
चार वेद तुम मुख से गावे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं ।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदंग क्या शख बजाऊं ॥
कोटि भानु थारे नख की शोभा, दीपक ले प्रभु कहा दिखाऊं
लक्ष्मी थारी चरणन की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेंट चढाऊं ।
तुम तिरलोकी के कर्त्ता हर्त्ता, तुम्हें छोड प्रभु कौन पै जाऊं
सूर श्याम प्रभु विपत्त विडारन. मन वांछित फल तुमहि सेपाउं

भजन नं० ३

हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो ॥ टेक ॥
समदर्शी है नाम तुम्हारो, चाहो तो पार करो ।
इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरो ॥
जब मिल गयो तब एक रूप भयो, गंगा नाम परो ।
एक लोहा पूजा में राखो, एक घर बधिक परो ॥
उच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो ।
अब की बेर मोहि नाथ उभारो, नहिं प्रण जात टरो ॥
यह माया भ्रमजाल निवारो, सूरदास सगरो ।

भजन नं० ४

दोहा–पुरुष प्रकृति अरु ईश मिल, अकार उकार मकार।
सर्व वेद का मूल है, एक शब्द ओंकार॥
हमारे प्रभु एक तुम्ही ओंकार॥ टेक॥

मात, पिता, गुरु, बन्धु सहोदर, धन, विद्या परिवार।
मन बल बुद्धि प्राण तुम्ही हो, नयनों में उजियार।
हरि होकर हरे रंग में दीखो, पत्र पुष्प फल डार।
धरनी आकाश शशि और तारे, बिजली में चमकार।
उपर नीचे पर्वत सागर, सब तुम अपरम्पार।
तुम्ही सूरज में हो गरजो, बरसो अमृत धार।
एक ध्वनि हो तुम से सबकी, तुमरा वार न पार।
सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता, हमको दो दातार।
काम, क्रोध, मद, लोभ निवारो, परमानन्द दो प्यार।

भजन नं० ५

हरि नारायण हरिनारायण नारायण हरि ओम्॥टेक॥
सब दुख हारण, सब सुख कारण, पतित उधारण प्रभु ॐ।
शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरुपा, अगम अरुपा शिव ओम्।
निगम निरुपा सुर नर भूपा, ज्योति स्वरुपा प्रभु ओम्।
अनन्त अपारा पार न पारा, निरधारा हरि ओम्।
ब्रह्म विकास स्वयं प्रकाश, जगन्निवास स्वामी ओम्।
राम गोविन्द, परमानन्द, कृष्ण मुकुन्द गुरु ओम्।

भजन नं० ६

दोहा-अच्युत अगम अपार प्रभु, तद्वन ब्रह्म अनन्त ।
परम हंस अज ईश शिव, सबके आदि और अन्त ॥

भजो रे मन । शुद्ध सच्चिदानन्द ॥ टेक ॥
सकल ब्रह्माण्ड पुकारें जिनको, अनन्त अपार अखण्ड ।
पुष्प कुमार गगन में तारे, वर्णत सूरज चन्द ।
सभी वस्तु की सुन्दर ताई, जितलावें गोविन्द ।
ओंकार अज ज्योति स्वरुपा, पूर्ण परमानन्द ।

भजन नं० ७

जपो रे मन मूल मंत्र ओंकार ॥ टेक ॥
ओंकार से वेद प्रकट भये, विद्या का भण्डार ।
ओंकार का ध्यान धरे जो, हो जावे भव पार ।
वेद के आदि अन्त और मध्य में, ऋषि करें उच्चार ।
चारों वेद पुराण अठारह, सर्व शास्त्र का सार ।
निरंकार अज ज्योति स्वपा, आप में आप निहार ।

भजन नं० ८

दोहा–एक शब्द गुरुदेव का, जाका अनन्त विचार ।
पण्डित थाके मुनि जना, वेद न पावें पार ॥

सुनो भाई साधो अक्षर पद का विचार ॥टेक॥

नित्य शुद्ध, शिव रूप, निरंजन,
निर्विकल्प, निश्चय भव भंजन ।
अजर, अमर, अज, निर्गुण,
निर्मल निर्विशेष निराधार ॥१॥
विभु अनन्त अद्वैत अविनाशी,
पुरुषोत्तम, स्वतन्त्र सुखराशी ।
स्वयं प्रकाश असंग अनादि,
निष्क्रिय और निराकार ॥२॥
पूर्ण ब्रह्म अनन्त अनूपा,
अप्रमेय अव्यक्त अरुपा ।
निर्विकार निरवयव सनातन,
अगम अखण्ड अपार ॥ ३ ॥

भजन नं० ६

गई रजनी हुवा सवेरा उठ कर जप लो तुम ओंकार । टेक
ब्रह्म मुहूर्त में उठ गाओ, गुण ईश्वर का ध्यान लगाओ ।
परमानन्द मगन हो जाओ, शोभन समय विचार ।
आया दिन गया अन्धेरा ॥ १ ॥
पूर्व दिशा अब अरुण भई है, प्रकृति देवी पटबदल रही है ।
यमने तम की बाह गही है जागे सब नर नार ।
हिये में हरि को हेरा ॥ २ ॥
प्रमुदित नलिनी विहंस खिली है, प्रिय समीर से सुरभि मिली है
अति शोभामय वनस्थली है, अलिगण करें गुंजार ।
लसे आम आंवरे केरा ॥ ३ ॥
उषा देवी के दर्शन पाकर, हुए प्रफुल्लित सभी चरा चर ।
तुम क्यों सोये शीश झुकाकर, जागा सब संसार ।
करो भारत का सुलझेरा ॥ ४ ॥
वेद धर्म का सूर्य चढा है जा में ज्ञान अनन्त भरा है ।
सुनो पढो और लाभ निरा है, जिससे हो उद्धार ।
सब मिट जावे मेरा तेरा ॥ ५ ॥

नव जीवन संचार हुवा है, ऐक्य भाव विस्तार हुवा है।
सुखमय सब संसार हुवा है, ज्योति स्वरूप निहार।
हरि का हृदय में डेरा ॥ ६ ॥
आश्रम में चिड़िया चहचहावें, पक्षी मिल हरि गीत सुनावें।
नरनारी सब तुमको ध्यावें, कर रहे जय-जय कार।
सब धन्यवाद कहें तेरा ॥ ७ ॥

भजन नं० १०

तेरा यह खेल अपारा है जित देखूं तित तू ही तू है। टेक
तू ही वन में, तू ही घर मन्दिर में, कूप बावड़ी तू ही सखर में
तू ही सब का करतार, भरम से न्यारा है ॥ १ ॥
इन्द्रियों में देखा तू ही मन है, शुद्ध करण में तू ही खरवर है।
वरुणों में तू ही वरुण, जलों में गङ्गा धारा है ॥२॥
ज्ञानी में ब्रह्म ज्ञान तू ही है, योगी का सुख ध्यान तू ही है।
सब का जीवन प्राण तू ही अधारा है ॥ ३ ॥
फूल पात फल डार तुही है, कालों का महाकाल तू ही है।
परमानन्द प्रकाश शब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

भजन नं० ११

जगत में फैला दो ब्रह्म ज्ञान ॥ टेक ॥

सत्य धर्म और वेद पठन में, अर्पण कर दो प्राण।
सत्य ही बोलो झूठ को छोड़ो, तज दो हठ अभिमान ॥१
नित प्रति पांचों यज्ञ रचाओ, दो दीनों को दान।
देश-देश उपदेश सुनाओ, दो गरजोसिंह समान ॥ २॥
चीन अरब काबुल क्या लंका, क्या योरप जापान।
सन्तानो को वेद पढाओ, छोड़ो मोह अज्ञान ॥ ३ ॥

भजन नं० १२

श्री राम चलावें काम राम रखवारा है ॥ टेक ॥

गर्भवास में रुआवन हारा,
उसी ने दूध कुचन में डारा।
एक उसी का लेऊ सहारा,
उसी से चलता काम विश्व अधारा ॥१॥
वही राम जिन रावण मारा,
सब भक्तन का कारज सारा।
उसी राम का सकल पसारा,
वही मुक्ति का धाम बड़ा दातारा है ॥२॥

महादेव विष्णु भगवाना,
ऋषि मुनि सुर सन्त सुजाना।
राम नाम का करें बखाना,
शास्त्र ऋग्यजु साम जिसे उच्चारा है ॥ ३ ॥
राम रमा सब के घट माहीं,
राम बिना कोई अचर नाही।
राम प्रकाशे सबके माहीं,
जपलो उसका नाम यही जग सारा है ॥४॥
अनन्त आकाश, सूर्य, शशि,
तारे, पृथ्वी, सागर पर्वत भारे।
एक उसी के रहे सहारे,
बोलो सीता राम, यही एक प्यारा है ॥५॥

भजन नं० १३

साधो हम हैं बासी वा देश के ॥ टेक ॥
हमरा देश में चांद न सूरज, रात दिना रहे एक से ॥१॥
सूरत निरत का ताना पूरे, कपड़ा बुने अलेख के ॥२॥
हमरा कपड़ा महंगा बिकत है, पहने सन्त विवेक के ॥३॥
हमरा देश का मरम जो जाने, रात दिना रहे एक से ॥४॥
कहें कबीर सुनो भाई साधो, साधु साहित एक से ॥५॥

भजन नं० १४

वैष्णव जन तो तैने कहिये, जे पीर पराई जानै रे ।
पर दुखी उपकार करे तोय, मन अभिमान में आंड़े रे ।।टेक
सकल लोक मा सहुले वन्दे, निन्दा न करे केड़ी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन-२ जननी तेरी रे ।।१।।
सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर सभी जेने मात रे ।
जिहवा थकी असत्य ना बोलो, पर धन नव झोल हाथ रे।।२।।
मोह माया व्यापे जेहना, दृढ़ वैराग्य जेहना मनवा रे ।
राम नाम सौ ताली लागी, सकल तीरथ तैना तनवा रे ।।३
मन लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवरिया रे
भड़े नरसय्यो तेनो दर्शन करता, कुल एको तल तारियां रे ।।४

भजन नं० १५

जय जय सीताराम मुख से बोलो रे ।।टेक।।
बड़े भाग्य मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद ग्रन्थन गावा ।
राम भजन करो सुकरम बावा, तज दो खोटे काम-
वृथा मत डोलो रे ।।१।।

राम नाम है रतन अमोला, एक रत्ती और बावन तोला।
सन्त जनों ने खूब टटोला, पूर्ण कर दे काम–
हिय बीच तोलो रे ॥ २ ॥
अष्ट प्रकार काम को त्यागो, भगवद् भक्ति में नित लागो।
सोये बहुत दिन अब तो जागो, कौड़ी लगे ना दाम–
त्यार तुम होलो रे ॥ ३ ॥
इष्ट धर्म आश्रम का राखो, मुख से झूठ कभी मत भाखो।
गांव–गांव हो आश्रम लाखों, बने देश हरि धाम–
पाप को धोलो रे ॥ ४ ॥

भजन नं० १६

मन परदेशी हा ये नहीं अपना देश ॥टेक॥
सत का कहना सत् में रहना, आनन्द रुप किसी का भयना
जो कोई कहे सभी की सहना, यही रटन हमेश ॥ १ ॥
गुरु का वचन सत्य कर मानो, जगत् जाल झूठा कर जानो
ब्रत्व मसि का रूप पिछानो, कट जाय करम कलेश ॥२॥
जो दीखे सो रूप हमारा कोई नहीं है हमसे न्यारा।
मित्र और शत्रु कोई न हमारा, मिट गये राग और द्वेष ॥३
शाह गुरु शुकदेव विराजे, चरण दास चरणों में साजे।
गुरु के वचन कभी नहीं त्यागे, यही सत्य उपदेश ॥४॥

भजन नं० १७

निरंजन धुन को सुनते हैं सन्त सुजान ।।टेक।।
बैठ एकान्त लगाय के आसन, मूंद लिये दो कान ।
झीनो धुन में सुरत लगावें, करते हैं नाद पिछान ।।
घंटा शंख बांसुरी बैना, बाजै मधुरी तान ।
ताल मृदंग नगारा पीछे, गरजे है मेघ समान ।।
तन मन की सब दुविधा मेटी, धरें निरन्तर ध्यान ।
ब्रह्म ज्योति घट भीतर दर्शी, बिसरे है काया मान ।।
दिन २ ध्यान नाद का सुनकर होत मन गल तान ।
ब्रह्मानन्द भव बन्धन छूटे, पाये हैं पद निर्वान ।।

भजन नं० १८

भजन बिन बावरे, तैंने हीरा सा जन्म गंवाया ।टेक।
कभी न आया सन्त शरण में, ना कभी हरि गुण गाया ।
बह-बह मरा बैल की नाईं, सोय रहा उठ खाया ।।१।।
ये संसार हाट बनिये की, सब जग सौदा आया ।
चातुर माल चौगुना कीना, मूरख मूल टगाया ।।२।
ये संसार फूल सेंमल का, सूवा देख लुभाया ।

मारी चोच रुई निकस्याई, सुएडी धुन पछताया ॥३॥
ये संसार माया का लोभी, ममता महल चिनाया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछु नहीं आया ॥४॥

भजन नं० १६

मब से उचो प्रेम सगाई टेक।
दुर्योधन की मेवा त्यागी, साग विदुर घर खाई ॥
झूठे फल शिबरी के खाये, बहु विधि प्रेम लगाई ॥
प्रेम के वस नृप सेवा कीनी, आप बने हरि नाई ॥
राजसूय यज्ञ युधिष्ठिर कीना, वा में झूठ उठाई ॥
प्रेम के वस अर्जुन रथ हाक्यो छाड़ दयी ठकुराई ॥
ऐसो रास रच्यो वृन्दावन, गोपियन नाच नचाई ॥
सूर कूर इस लायक नाहीं, कहां लगि करत बड़ाई ॥

भजन नं० २०

दोहा— ज्यों तिल मांहि तेल है चकमक मांही आग।
तेरा सांई तोय में जाग सके तो जाग ॥
मन्दिर में काई ढूढतो फिरे, तेरी कुञ्जगली में भगवान।
घट ही में दीनानाथ ॥ टेक ॥

मूरत तो मन्दिर में मेली, मुख से नाहीं बोले।
करनी पार उतरनी बन्दे, वृथा जन्म क्यों खोले ॥१॥
गऊ मुख से गंगा निकली, पांचों कपड़े धोले।
बिन साबुन तेरा मैल कटेगा, हर भज २ हलुवा होले ॥२॥
तन कर कुण्डी मन कर साबुन, याही में शील समोले।
सुरत ज्ञान का करे न मोगरा, दिल का दागल धोले ॥३॥
शील सत्य की नौका चढ़के, हर के दर्शन जोले।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, पर्वत राई के ओल्हे ॥ ४ ॥

भजन नं० २१

दोहाः—हम वासी उस देश के जहां जात वर्ण कुल नांह।
शब्द मिलावा हो रहा देह मिलावा नांह ॥

वहुर नहिं आऊंगा, जाऊं हजारे देश ॥ टेक ॥
गुण की गठरी खोल दिखाऊं, पांच तीन की रचना लाऊं।
लग रहा सीधा तार गगन चढ़ जाऊंगा ॥ १ ॥
अपने गुण पांचों दे दीने, अपने-अपने उन ले लीने।
हो तुर्या असवार परम, सुख पाऊंगा ॥ २ ॥
उलटी पृथ्वी नीर मिलाऊं, ओले नीर तेज में पाऊं।
तेज पवन में मेल पवन नभ लाऊंगा ॥ ३ ॥

टूट गयी आस-त्रास कित करिये,

अपना न कोई, कहो कहां रहिये ।

आठ पहर संग्राम में कैसे सुख पाऊंगा ॥४॥

छूट गया भोग स्वाद गया जी का,

जब लग रहा तब लग रहा फीका ।

देखत आवे छींक तुरत उठ जाऊंगा ॥५॥

शब्द विहंगम वास बसाउं,

जो कोई सुने उसका जनम मिटाऊं ।

अजब रंगीला ताक उसी में लौ लाऊंगा ॥६॥

संता दीनो मौज अजब घर छाऊं,

सुख सागर में डेरा लाऊं ।

गुण गावे मानी नाथ, अधर घर छऊंगा ॥७॥

भजन नं० २२

क्या तन माजता रे आखिर माटी में मिल जाना ॥टेक

मांटी ओढन माटी पहरन, माटो का सरहाना ।

मांटी का कलवूत बनाया, जामें भंवर समाना ॥१॥

मात-पिता का कहना मानों, हरि से ध्यान लगाना ।

सत्य वचन तुम निश दिन बोलो सब को सुख पहुँचाना ॥२

एक दिन दुल्हा बने बराती सिर पर दुले निशाना ।
एक दिन जाय जंगल में सोवे कर सूधे पग ताना ॥३॥
पढना लिखना कभी न छोड़ो जो चाहो कल्याणा ।
सब के स्वामी पालन कर्त्ता उनका हुकम बजाना ।४॥

भजन नं० २३

मो को कहां ढूढे रे बन्दे मैं तो तेरे पास में ।।टेक॥
ना तीरथ में, ना मूरत में ना एकान्त निवास में ।
ना मन्दिर में ना मसजिद में, ना काशी कैलाश में ॥१॥
ना मैं जप में, ना मैं तप में, ना मैं व्रत उप वास में ।
ना मैं क्रिया कर्म में रहता, ना मैं योग सन्यास में ॥२॥
नहीं प्राण में, नहि पिण्ड में, ना ब्रह्माण्ड आकाश में ।
ना मैं त्रिकुटि भवर गूफा में, सब श्वासन की श्वांस में ॥३
खोजी होय तुरत मिल जाऊं, एक पल की तलाश में ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो मैं तो हूँ विश्वास में ॥४॥

भजन नं० २४

भगवद्भक्ति आश्रम का होवे सब जग में प्रचार ।टेक
देश, नरेश, महेश की भक्ति, करो दूर जिससे हो कुमति ।
ईश्वर दे सबको मिल सुमति, जिससे हो उद्धार ।
मिट जाय सब दुख श्रम का ॥१॥

गांवों में आश्रम बन जाओ, विद्यालय वहां पर खुलवाओ।
लड़का लड़की साथ पढ़ाओ, परदा देवो डार–
सब कर दो नाश भरम का ॥ २ ॥
गौ वृक्षों की नसल बढ़ाओ, इनको कटने से बचवाओ।
जो तुम भारत का सुख चाहो, करो विद्या का प्रचार–
है गा यह काम धर्म का ॥ ३ ॥
गोबर का तुम खाद बनाओ, डार खेत में खूब कमाओ।
चूल्हे में नित लकड़ी जलाओ, होय सुखी नर नार–
है युग काम थापन का ॥ ४ ॥
हवा दार तुम महल बनाओ, खिड़की झरोखे खूब लगाओ
पशुओं से तुम मनुष्य बनाओ, बैन रहा ललकार–
अब है यह समय करम का ॥ ५ ॥

भजन नं० २५

मनुष्य का कर्तव्य

सुनो धर्म कर्तव्य मनुष्य का, सर्व काल जो सुखदायी
सुनकर ग्रहण करें श्रद्धा से, बने काम उसका भाई ॥टेक॥
दुख में दुखी न होय भूल कर सुख में नहीं जो हर्षावे।
हानि लाभ में रहे धीर, चित जरा न मन में घबरावे।
क्षमा शील संन्तोष शान्ति को, कभी न मन से बिसरावे।
विद्या विनय विवेक बुद्धि में बसै तो सुख सम्पति आवे।
रहे पवित्र शुद्ध तन मन से तजै कपट और कुटिलाई ॥१॥
परधन और परनारी निरख कर मन ललचाना ना चाहिये।
अष्ट प्रकार त्याग मैथुन को ईश्वर गुण गाना चाहिये।
सत्य बात कहने सुनने में, कभी न शर्माना चाहिये।
दुष्ट संग से बचे सदा सत संगति में जाना चाहिये।
करे अतिथि सत्कार वस्त्र भोजन से बड़ों की सेवकाई ॥२॥
करे धर्म से धन का सञ्चय चाहे जो रोजकार करे।
तन मन धन और वचन कर्म से एक का एक सुधार करे।
कटुक वचन नहीं कहे किसी को, पर हित पर उपकार करे।

सत्य विद्या सीखे सिखलावे सदा सत्य व्यवहार करे।
वेद शास्त्र में ऋषि मुनियों ने सुर पद रीति यह बतलाई ॥३॥
मनुष्य मात्र का धर्म वेद में परमेश्वर ने बतलाया।
वही आज संक्षेप रीति से लघु मति से मैंने गाया।
करो-करो कर्तव्य मनुज का, मिले न फिर नर की काया।
अवसर दुर्लभ वृथा जात है, बड़े पुण्य से जो पाया।
खोल नैन सुख चैन हिये के अब तो चेतो चितलाई ॥४॥

भजन नं० २६

स्वामी जी! सद्गुरू प्रमानन्द ज्ञान विज्ञान अपारा हो ॥टेक
हमें अब सही मनुष्य तन धारा।
मन का मिट गया सकल विकारा॥
सच्चे गुरु जी का लिया सहारा।
मिला बेहद भन्डारा हो! ज्ञान विज्ञान अपारा हो॥ १॥
मोक्ष की चली जगत में धारा।
किरण अब छुट रही अगम अपारा॥
जन कोई जाने जानन हारा।
सत्य ब्रह्म ज्ञान विचारा हो! ज्ञान विज्ञान अपारा हो ॥२

राव बलबीर किशोरा नन्द ।
रामानन्द – कृष्णा नन्द ॥
रूप राम–राम–नित्यानन्द ।
सेवानन्द प्यारा हो ! ज्ञान विज्ञान अपारा हो ॥ ३ ॥

सतसंग भवन बना सम्पूरा ।
बैठे ऋषि मुनि और शूरा ॥
सरोवर बना बीच में पूरा ।
लेखामल मलन्हा रहा हो ! ज्ञान विज्ञान अपारा हो ॥४॥

कहैं न्यूं शंकरानन्द महात्मा ।
सब की सम्झो एक आत्मा ॥
ना कुछ देखा जात पात नां ।
ब्रजानन्द करे आनन्द ! लेखराम भी थारा हो
ज्ञान विज्ञान अपारा हो ॥ ५ ॥

उपदेश

समुद्र जब स्थिर रहता है तब उसे ब्रह्म कहते हैं और उसी समुद्र में जब लहर उठती है तब उसी को शक्ति या माया कहते हैं, वह देश काल निमित्त स्वरूप है अविशेष सगुण और निर्विशेष निर्गुण उसके दो रूप हैं। पहले रूप में वह ईश्वर जीव और जगत् है और दूसरे रूप में वह अज्ञात और अज्ञेय है। सर्व शक्तिमत्ता, सर्व व्यापकता एवं अनन्त-दया उसी जगत जननी जगदम्बा प्रेम स्वरुपिणी भगवती के गुण हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान है। एक कण-बिन्दु कृष्ण, बुद्ध क्राइस्ट आदि और जगत का विस्तार एक बिन्दु को प्रकाशित करता है। एक आत्मा ब्रह्म भिन्न २ सर्व उपाधियों में प्रकाशित होता है।

बड़प्पन की डींग दलबन्दी और ईर्ष्यादि सदा के लिये छोड़दो, पृथ्वी की भांति सहिष्णु हो जाओ, लड़कपन की चंचलता और बुढ़ापन की गम्भीरता दोनों मिला कर सब के साथ प्रेम से रहो। आत्मा के स्वरुप का व्यक्त और कभी अव्यक्त भाव होता है। आत्मा मानो बादलों से

ढके हुये सूर्य की न्याई है। हृदय को समुद्र के समान महान् बना डालो, क्षुद्र ग्रहों को पार कर जाओ, अमंगल के आने पर भी आनन्द में उन्मत्त हो जाओ।

संसार को एक चित्र की भांति देखो जगत में कोई तुम को विचलित नहीं कर सकेगा। अहंता को दूर कर दृढ़ता से खड़े हो जाओ, काम कांचन मान और यश को छोड़ कर ईश्वर को दृढ़ता से पकड़ो।

विधि निषेध के घेरे में पड़े रहने से आत्मा का प्रकाश कर सकता है उसके उठने ही विधि निषेध कम हो जाते हैं।

दूसरों की सेवा शुभ कार्य है इसी के प्रभाव से चित्त शुद्ध होता है, इसी के प्रभाव से सबके भीतर बैठे हुये अन्तर्यामी भगवान प्रकाशित होते हैं। आदेश के अनुसार संगठन करने का उद्योग करना यही धर्म का लक्ष्य है, यही उद्देश्य है।

आदर्श धार्मिक क्षमा, धृति, शौच, शान्ति, उपासना और ध्यान में परायण आदर्श का अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है।

जहां प्रेम वहीं विस्तार, जहां स्वार्थता वहीं संकोच अतएव प्रेम ही जीवन का एक आधार है। अवश्य अहैतुक प्रेम करना चाहिये, वही एक मात्र जीवन गति का नियमन करने वाला है।

जिस कर्म से जीवों के मन में धीरे-धीरे ब्रह्म भाव के उदय होने में सहायता पहुँचे वहीं कर्म उत्तम है। यदि किसी अधिक सुभीता देना हो तो बलवान की अपेक्षा दुर्बल को अधिक सुभीता दो।

सदा दाता बनो, अपना सर्वस्व दे डालो, पर बदले कुछ न चाहो। दूसरे से प्रेम करो, सहायता करो, सेवा करो, तुमसे जो कुछ बने दूसरों के लिये करो पर सावधान बदले में कुछ न चाहो। व्यक्तिगत देशगत, कर्म कार्य का विचार कर साधन करो यही सार है।

'परोपकाराय सतां ही जीवनम्'

-: आश्रम के उद्देश्य :-

१ श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना ।

२ गोरक्षा और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना ।

३ जंगलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना ।

४ शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्य मात्र विद्या लाभ कर सके और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना ।

५ बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना ।

६ आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना ।

७ सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना ।

८ राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना ॥

मुद्रक
विराजश्री प्रिंटिंग प्रेस
चरखी दादरी (भिवानी)